SHRI BINDESHWARI DUBEY: Sir, I move:

That the Bill as amended, be passed.

The question was put and the motion was adopted.

PUNJAB APPROPRIATION (NO. 2) BILL 1989

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF EXPENDITURE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI B. K. GADHVI): Sir, I beg to move:

> That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Punjab for the services of the financial year 1989-90 as passed by Lok Sabha be taken into consideration.

(The Vice-Chirman, Shri V Narayanaswamy, in the Chair\

As the Hon'ble Members are aware, the Budget of the State of Punjab for 1989-90, was presented to Parliament on the 17th March, 1989 and a 'Vote on Account' to meet the requirements of the State Government for the first six months ending September, 1989 was obtained and the Appropriation (Vote on-Account) Act 1989 was passed in March, 1989.

The Lok Sabha has granted the balance of the Demands for Grants and has passed the connected Appropriation Bill, which is now before this House. To meet the total estimated expenditure during the current year, the Bill provides for the payment and appropriation from and out of the Consolidated Fund of Punjab a total sum of Rs. 4,952.49 crores....(*Interruption*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Dipen Ghosh, the Minister is on his legs. Kindly take your seat. (*Interruption*)..

SHRI KAMAL MORARKA: The Minister being on his legs is nothing. If the Chair is on the legs....(*Interruptions*)....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The hon. Ministerison his legs.

SHRI KAMAL MORARKA: The Minister is not the Chair. I am sorry. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Why not?

SHRI KAMAL MORARKA: The Minister is not the Chair. I am sorry.

SHRI B. K. GADHVI: What the Chair says is about the etiquette of the Member on the floor of the House.

SHRI KAMAL MORARKA: We do not need any homilies on etiquettes from the Minister.

SHRI B. K. GADHVI: No. No. I am saying what the Chair points out.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY)· Members should not disturb when the Minister speaks. That is what I am saying. (*Interruption*)

SHR B. K. GADHVI: ....comprising in Rs. 3272.05 crores voted by the Lok Sabha and Rs. 1680.44 crores charged on the Consolidated Fund of the State and is inclusive of the sum earlier authorised for withdrawal under the Punjab Appropriation (Vote on Account) Act 1989. Sir, in March 1989 while discussing the Appropriation (Vote on Account) Bill, this House had a general discussion on the Punjab Budget for 1989-90. I do not, therefore, wish to take the time of the House by again dwelling upon the various provisions in the Budget. I shall, however, endeavour to deal with the points that may be raised by hon. Members, in my reply to the discussion.

The question was proposed.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश) : उप सभाध्यक्ष जी, पंजाब प्रदेश के 1989–90 परिव्ययों को चुकाने के लिए उस प्रदेश की संचित निधि से 4,952 करोड़ 49 लाख 27 हजार रुपये निकालने के लिये जो यह एप्रोप्रिएशन बिल प्रस्तुत किया गया है, मेरी इसमें सहमति है, मैं इसका विरोधी नहीं हूं, लेकिन मान्यवर, खेद के साथ कहना पड़ता है कि दो सवाल इस देश के सामने और संसद के सामने अहम बन गये हैं, "बोफोर्स और पंजाब" यह कैंसर से भी भयंकर रोग इस देश के लिए होता चला जा रहा है।

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : राम जेठमलानी।

श्री ईश दत्त यादव : मैं उस पर आ रहा हूं। और संसद में बार-बार इन दोनों विषयों की चर्चा करना कोई अच्छी चीज नहीं है। महोदय, 1987 में पंजाब में बरनाला जी की सरकार थी, 11 मई, 1987 को इसे भंग कर दिया गया। मेरी राय में और विपक्ष की राय में और देश के आम आदमी की राय में यही है कि हरियाणा के चुनाव में कामयाबी हासिल करने के लिए सरकार भंग की गई, कोई औचित्य नहीं था, कोई धारा नहीं था उस सरकार को हटाने के लिये, लेकिन हम जब भी देश हित की बात करते हैं, सही बात कहते हैं उस पक्ष के लोग पर इस पर गंभीरता से विचार करने के लिए तैयार नहीं होते। आज दो वर्ष से अधिक हो गये हैं लेकिन पंजाब की समस्या हल नहीं हुई हैं। रोज समाचार-पत्रों में आता है, टेलीविजन पर, रेडियो पर आंकड़े आते हैं कि इतने लोग मारे गये, जब हम कहेंगे तो आप इस पर नाराजगी जाहिर करते हैं सत्ता पक्ष के लोग, लेकिन पंजाब की समस्या न तो अकेले सत्ता पक्ष की समस्या है और न ही विपक्ष की समस्या है, यह पूरे देश की एक राष्ट्रीय समस्या है और गंभीर समस्या है। पार्टी के भेदभाव जो भूल करके आपको इसका राजनीतिक हल खोजना चाहिए। ट्रेजरी बैंचेज पर बैठे हूये लोग जमा करेंगे, आपने कभी भी पंजाब की समस्या का राजनीतिक हल ढुंढने का प्रयास नहीं किया, विपक्ष का सहयोग लेने का आपने प्रयास नहीं किया और विपक्ष के या देश के किसी भी व्यक्ति का जो सही सलाह दे रहा है, आप राजनीतिक विचारों से राजनीतिक भावना से बराबर उसका विरोध करते रहे। अभी पांडेय जी चले गये, मैं उनका हृदय से आदर करता हूं। हमारे सदन के एक माननीय सदस्य हैं। उस दल के वरिष्ठ सदस्य हैं। वह अथवा हम समझते हैं कि इस देश का कोई भी व्यक्ति इस देश को खंडित नहीं देखना चाहता, सब अखण्ड भारत की कल्पना करते हैं। सब देश की एकता और राष्ट्रीयता को कायम रखना चाहते हैं। कोई आपका ही ठेका नहीं है। लेकिन बार-बार एक सवाल हर वक्त उठ रहा है, जहां कहीं मुंह से शब्द खालिस्तान निकला तो सदन के अंदर हंगामा, अखबार के अंदर हंगामा।

मान्यवर, मैं इसलिए आपसे अनुरोध कर रहा था, इस पर सत्ता पक्ष को और विपक्ष को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि पंजाब की समस्या का निराकरण हम कैसे कर पायेंगे, कैसे हल कर पायेंगे दो वर्ष से लगातार आप पुलिस, पी० ए० सी० मिलटरी, पैरा-मिलटरी फोर्सेज के बल पर चल रहे हैं। आप चाहते हैं कि सारी समस्या का हल हो जाएगा, लेकिन दो साल हो गए, दो साल से ज्यादा हो गए और आप हल नहीं कर सके इन समस्याओं को। आज पूरे देश में निराशा का वातावरण है। आप इस फौज को पुलिस को लगाए रखिए, लेकिन पक्ष का और इस देश के आम आदमी का अगर कोई सुझाव है तो उस पर आपको गंभीरता से विचार करना चाहिए। यह विचार सही नहीं है। आप न मानिए, लेकिन इस पर ध्यान देना पड़ेगा, इसका राजनीतिक हल ढुंढना पड़ेगा क्योंकि पंजाब की समस्या भी है, वह बढ़ती चली जा रही है, कम नहीं हो रही है।

मान्यवर, अभी पिछले सत्र में जब यह पंजाब प्रदेश में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने के लिए संसद में प्रस्ताव आया था तो उस समय गृह मंत्री श्री बूटा सिंह जी ने 3 नवम्बर, सन् 1988 को इस सदन में भाषण देते हुए कहा था। यह पार्लियामेंटरी डिबेट राज्य सभा की पार्ट सेकेंड, 3 नवम्बर, 1988 से श्री बूटा सिंह जी के भाषण के कुछ अंश, को मैं उदधृत करना चाहता हूं, उन्होंने इसे स्वीकार किया है कि लंबे राष्ट्रपति शासन काल के बाद भी पंजाब की समस्या हल होती दिखाई नही पड़ रही है, स्मगलिंग कम नहीं हो रही है और अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान द्वारा उग्रवाद बढ़ाने की सहायता में कोई कमी नहीं आ रही है। मैं वही अंश पढ़ देता हूं, यह इसके पृष्ठ 517 पर है—

> "मेरे पास कुछ आंकड़े हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि पिछले एक वर्ष में बहुत भारी मात्रा में जो स्मगलिंग हुई है, जिसका पैसा पूरे का पूरा हथियारों में इस्तेमाल किया जाता था, जो हथियार आतंकवादियों को मिलते थे, वह सारी की सारी स्मगलिंग पाकिस्तान की सरकार की मदद से, उनकी देखरेख में, उनकी फौज और उनकी जो पैरा-मिलटरी फोर्सेज हैं, उनकी देखरेख में यह स्मगलिंग करवाई गई, इसलिए कि यह पैसा पंजाब के आतंकवादियों को मिले और वह उससे हथियार खरीदें।

1987 से लेकर सितम्बर, 1988 तक अफीम 89 किलोग्राम,

and in the past five months it is 40 kg; heroin in 2301 kg; and in the past five months, it is 2404 kg; hashish is 6000 kg and in the past five months, it is 11000 kg. You must understand. This is a regular channel by which Pakistan is helping the extremists."

मान्यवर, यह इस देश के गृहमंत्री का ब्यान है, जिनके ऊपर इस देश की सुरक्षा का भार है। मैं ज्यादा आंकड़ों के जाल में नही जाना चाहता और न ही आंकड़ों के ऊपर कोई बहस करना चाहता हूं। इसी सदन ने स्वीकृति दी थी बोर्डर को सील करने के लिए, बहुत अधिक धनराशि भी स्वीकृत की गई थी, लेकिन आज भी बोर्डर हम सील नहीं कर सके हैं, आज भी बोर्डर से स्मगलिंग हो रही है, आज भी हथियारों की सप्लाई बोर्डर से हो रही है। यह सब समस्यायें हैं, जिनकी ओर मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। महोदय, श्री पाण्डेय जी नहीं हैं, मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि किसी भी व्यक्ति की बात हो, आप उसकी बात को सुनिए। नफरत की बातें मत करिए। शायद उसकी बातों में कुछ तत्व हो, सारर्गभित बात हो। महोद, मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि इस देश का कोई भी नागरिक देश की अखंडत को चाहता है। हर आदमी देश की राष्ट्रीयता को मजबत करना चाहता है। विपक्ष भी चाहता है। केवल आप अकेले ठेकेदार नहीं हैं। विपक्ष का विदेश से सम्बन्ध नहीं है। विदेश से संबंध आपका हो सकता है। यरोप हो, इटली हो या दुनियां के दूसरे देश हों, उनसे आपका संबंध हो सकता है। इसलिए आपा इस सभी तथ्यों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

महोदय, पांच बार आपने राष्ट्रपति शासन बढ़ाया है। माननीय वित्त मंत्रीजी ने पिछले सत्र में 29-3-89 को पंजाब एप्रोप्रिएशन बिल प्रस्तुत किया था और आज फिर प्रस्तुत किया है। मेरा केवल एक ही अनुरोध है कि पार्टी का भेदभाव भूलकर पंजाब समस्या को हल करिए। सरकार अगर इस समस्या को गंभीरता से ले तो, गंभीरता विचार करते तो पंजाब की समस्या इतने से दिनों तक लिगर आन नहीं होती। महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि चाहे जो भी कारण हो, सरकार को इसकी जानकारी होगी, सरकार ने पंजाब की समस्या को हल करेने के लिए गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया है। विपक्ष का सहयोग नहीं लिया है। इसी सदन में बार-बार कहा

[श्री ईश दत्त यादव]

गया कि आप विपक्ष का भी सहयोग लीजिए। पंजाब के अन्दर शांति का, सद्भावना का वातावरण बनाइए। आपने उस पर ध्यान नहीं दिया। रबरो, साहब, जिनके ऊपर जिम्मेदारी सौंपी गयी, अभी तीन महीने पहले अखबार में उनका बयान मैंने देखा है। उन्होंने कहा कि पंजाब की समस्या का केवल पुलिस और मिलिटरी से हल नहीं हो सकता है, बल्कि उसका राजनीतिक हल खोजना पड़ेगा आप राजनीतिक हल क्यों नहीं खोज रहे हैं?

महोदय, मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता। अंत में कुछ सुझाव देना चाहता हूं कि पंजाब की समस्या का एक मात्र हल यह है कि आप राष्ट्रपति शासन को ज्यादा समय तक मत चलाइए। प्रजातंत्र में, डेमोक्रेटिक कंट्री में फंडामेंटल राइटस को सस्पेंड कर देना, किसी राज्य की विधान सभा को लंबे समय तक भंग या स्थगित रखना डेमोक्रेसी के लिए खतरनाक चीज होती है। इसलिए मेरा सरकार से अनुरोध है कि पंजाब की समस्या का अगर आप हल चाहते हैं तो अविलंब चुनाव कराइए। पिछली बार गृह मंत्री जी ने इसी सदन में कहा था कि पंजाब के हालात जब थोड़े नार्मल होंगे, हम चुनाव करा देंगे यः बार-बार सरकार की ओर से आश्वासन आ चुका है, हर बार आश्वासन दिया जाता है कि जब परिस्थिति सामान्य होगी चुनाव करा देंगे। दो साल से ज्यादा होगए स्थिति सामान्य नहीं हो पा रही है। अगर आप स्थिति को सामान्य बनाना चाहते हैं, पंजाब की समस्या को हल करना चाहते हैं तो चुनाव कराइए। आप चुनाव करा देंगे। वहां लोकप्रिय सरकार बन जाएगी, वह पजाब की समस्याओं को समझेगी और समाधान करेगी। आप यहां दिल्ली में बैठकर केन्द्र में बैठकर राज्यपाल के भरोसे हैं, डायरेक्टर जनरल आफ पुलिस के भरोसे शासन कर रहे हैं, लेकिन वहां विकास के काम नहीं हो पा रहे हैं, वहां बेकारी बढ़ती चली जा रही है, नौजवान बेकारी से फ्रस्ट्रेटेड होते चले जा रहे हैं। इसलिए मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करूंगा कि आप अब देर मत कीजिए। अगर आप पंजाब की समस्या को हल करना चाहते हैं तो अविलम्ब वहां चुनाव करा दीजिए।

मान्यवर, इस संबंध में मेरा दूसरा सुझाव है कि बैठकर बात कीजिए गृह मंत्री जी और राज्य गृह मंत्री जी बराबर आश्वासन देते हैं कि हम विपक्ष का सहयोग लेंगे लेकिन मेरी जानकारी मे कभी भी उन्होंने सहयोग लेने का प्रयास नहीं किया। विपक्ष के सुझावों पर गंभीरता से विचार नहीं किया वरना समस्या का समाधान हो गया होता।

आखिर में मान्यवर, मैं इन्हीं शब्दों के साथ सरकार से केवल एक ही अनुरोध करना चाहता हूं कि पंजाब की समस्या हल करने की साफ नीयत बनाइए अगर आपकी नीयत साफ हो जाएगी तो पंजाब की समस्या हल होने में कोई कठिनाई नहीं होगी और मैं समझता हूं कि जब तक राष्ट्रपति शासन वहां रहेगा, वहां शांति कायम नहीं हो सकेगी। वहां की जो बेकारी की समस्या है नौजवानों की, वह हल होने वाली नहीं लगती और मैं बहुत तफसील में नहीं जाना चाहता, विस्तार में नहीं जाना चाहता, लेकिन पंजाब जो देश के लिए एक उदाहरण था कृषि के लिए, पंजाब जहां की धरती उपजाऊ थी, जहां के लोग महान थे ...(**व्यवधान**)....

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया (बिहार): अभी भी हैं ... **व्यवधान**) थे नहीं, आज भी हैं ...(**व्यवधान**).....

एक माननीय सदस्य: लेकिन माहौल खराब कर दिया है आपने....(**व्यवधान**)..

श्री ईश दत्त यादव: मैं कहां इंकार कर रहा हूं, लेकिन आज वह स्थिति नहीं है आप तो आंकड़े दे देंगे अपने बचाव के लिए, लेकिन मैं कहता

हूं कि जो पंजाब की पहले की स्थिति थी उत्पादन की—चाहे कृषि के मामले में हो, चाहे कारखानों के मामले में हो, चाहे दूसरी चीजों के मामले में हो—आज वह स्थिति नहीं है। यह सरकार तो कागज पर कलम का हल चलाती है और आंकड़ों की फसल काटती है और उसी को आप फिर पेश कर देंगे कि तरक्की हो रही है, शांति हो रही है।

तो मान्यवर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः दोहरा रहा हूं कि सरकार इसका राजनीतिक समाधान खोजे, हल खोजे और इस एप्रोप्रिएशन बिल में मुझे कोई आपत्ति नहीं है जो वहां के विकास के लिए है।

श्री दरबारा सिंह (पंजाब) : वाइस चेयरमैन साहब, पंजाब की समस्या पर बहुत कुछ मेरे दोस्त ने कहा है। सरकार ने पैसा मांगा है केन्द्र सरकार से अपने काम चलाने के लिए, जो काम हैं उनको पूरा करने के लिए, डेवलपमेंट में जो कमियां हैं उनको पूरा करने के लिए उन्होंने पैसा मांगा है ताकि एडमिनिस्ट्रेशन भी ठीक चले और डेवलपमेंट भी ठीक हो सके ... **(व्यवधान)**...

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी (आंध्र प्रदेश) : पंजाब की जनता को मांगना चाहिए, आप कौन हैं? .. **(व्यवधान)**

श्री दरबारा सिंह : मैं अर्ज करूंगा कि हैं बहुत कम दोस्त बैठे सामने लेकिन उनमें से एक-आध बहुत ज्यादा बोलता है, क्या करें उसका इलाज? मेरी बात सुन लीजिए, हमने तो तो सुनी है, गौर से हमारे दोस्त की बात भी सुनी है, अब जरा यहां से भी सुन लीजिए। .. **(व्यवधान)** ...

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : विधान सभा से पास कर इए, कब तक पार्लियामेंट की ... **(व्यवधान)**...

श्री दरबारा सिंह : आपने समझ लिया, मैं किसके बारे में कह रहा हूं। ... **(व्यवधान)**...जरा सुन तो लीजिए ... **(व्यवधान)**...

श्री रऊफ वलीउल्लाह (गुजरात) : दरबारा सिंह जी कह रहे थे कि एक शख्स है जो बहुत बोलता है, आपने सही समझ लिया ... **(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly look at the Chair and speak. Dont bother about interruptions (*Interruption by Shri Ram Awadhesh Singh*)

SHRI DARBARA SINGH: I am sorry he cannot sit idle. Let him go out and do something else than opposing this.

It is a very serious matter. It is not the Punjab problem alone. If normalcy comes in Punjab, this administration goes and there is a popular Government there, we will love it and everybody will love it., It will have its repercussions on the whole of India. Therefore, I have taken it seriously—not as if just to oppose it and go away.

श्री दरबारा सिंह : मैं आपसे अर्ज कर रहा था कि यह मसला जो है, वह पैसा इस बात के लिए खर्च करने के लिए मांगा है कि वहां एडमिनिस्ट्रेशन को चलाने के लिए और जो डेवलपमेंट के काम रुके हुए हैं, या चालू हैं उनको पूरा करने के लिए पैसा उन्होंने मांगा है। इस बात के लिए वह आपके पास आएं हैं। गवर्नमेंट आफ इण्डिया से पहली बात मैं यह चाहता हूं और वह यह है कि पिछले साल बड़े फ्लड्स आए और फ्लड्स में लोगों को बहुत नुकसान हुआ, नुकसान भी इतना ... **(व्यवधान)** आप चले जाएं बेशक, खत्म नहीं होगा। आज मैं जो अर्ज कर रहा था वह यह है कि रुपया मांगा है उन्होंने... जिन लोगों को पैसा नहीं मिला, जिनके अकेले जेवर नहीं गए बल्कि मवेशी भी गए, पूरे खानदान के खानदान बह गए, मैं पंजाब के उन जिलों में घूमा हूं मैं उन जिलों में घूमा हूं जहां आतंकवादी

[श्री दरबारा सिंह]

हैं, गुरदासपुर, अमृतसर, फीरोजपुर, फरीदकोट के जिले हैं मैं ग्राउंड की बात कर रहा हूं, सुनी सुनाई बात नहीं कर रहा हूं दूसरे लोगों की तरह से, उन लोगों ने कहा कि हमारे पास पैसा नहीं आया जिनका नुकसान हुआ है औरतें आईं, उन्होंने अपनी अर्जियां दीं मैंने कहा मैं पहुंचाऊंगा उन्होंने पैसा मांगा है सेंट्रल गवर्नमेंट से मैं मानता हूं कि वहां चूंकि आतंकवाद है इसलिए वहां कि डेवलपमेंट के लिए वहां की रिसोर्सेज बहुत कम हैं लेकिन गवर्नमेंट आफ इंडिया की बदौलत जितना काम चल सकता था चला रहे हैं इसीलिए इनके पास आए हैं तो सबसे पहले निहायत जरूरी यह है कि फ्लड्स का पैसा नहीं मिला उनका पैसा मिलना चाहिए इसलिए मैं मिनिस्टर साहब से अर्ज करना चाहता हूं उनका पैसा दिलाएं ताकि वे अपने घरों में बैठकर अपना गुजारा कर सकें जो पैसा वहां के लोगों ने या इन्स्टीट्यूशंस ने या यहां के लोगों ने दिया हैं कपड़ा दिया है, कंबल दिए, खाने पीने की चीजें दीं उससे उनको राहत मिली, यहां लोग कहते हैं कि वहां हिन्दू सिख में कलह है कहता हूं कि वहां देहातों में हिन्दुओं और सिखों में आपस में कोई भेदभाव नहीं है। वहां लोग जब सड़क पर बैठे थे जब बाढ़ आई और उनको बहाकर ले जा रही थी तो हिन्दुओं और सिखों ने उनकी मदद की। उनके आपस में कोई बैर नहीं है उनका एक ही सोर्स है उस सोर्स को तोड़ने की कोशिश लोगों ने की है। लेकिन मैं यकीन से कह सकता हूं कि वह सोर्स टूटेगा नहीं। हमारे एक मेंबर ने ठीक ही कहा था कि अब तक प्रोडक्शन वहां ठीक हो रहा है इसलिए कि वे काम करते हैं। जब वहां पर कांग्रेस की सरकार थी तो उस समय 59 परसेंट पैसा बजट का हमने इस बात पर खर्च किया कि पंजाब के हर घर में और हर इंडस्ट्री का बिजली मिले और उनको किसी के पास मांगने के लिए न जाना पड़े। आज पंजाब में मुकाबलतन दूसरे राज्यों से हर घर में बिजली है हर इंडस्ट्री को बिजली मिलती है. वहां कोई ट्रिपिंग नहीं होती। हमने मंजूरी ली थी कि भटिंडा और रोपड़ जिलों में जो स्कीम बनाई थी उनको पूरा करें. लेकिन जब तक माली इमदाद नहीं मिलती तब तक स्कीमें आगे नहीं चलती। आज एक स्कीम का नाम बदलकर बरनाला सरकार ने रणजीत सागर कर दिया है। इसका नाम पहले कुछ और था, मैं मानता हूं कि रंजीत सिंह बड़े काबिल आदमी थे, उनके ऊपर नाम रख दिया, हमें इस पर कोई ऐतराज नहीं है लेकिन उसको हमने शुरु किया था तो उसकी लागत 69 करोड थी जो आज बढ़कर 1100 करोड़ हो गई है आहिस्ता-आहिस्ता इसमें बहुत देर हो गई है। नतीजा यह है कि उसके लिए अब 1100 करोड़ की दरकार हो गई है उसको मुकम्मिल करने के लिए। नाम बदलने से न पानी मिलता है न बिजली मिलती है। पानी और बिजली के लिए पैसा लगाना पड़ता है। पैसे के लिए उन्होंने मांग की है। यह गलत बात है कि गवर्नर रूल में कुछ नहीं हुआ। जितनी तेजी से पापुलर गवर्नमेंट में हो सकता है उसका मुकाबला नहीं है। लेकिन कौन यह कहता है कि पापुलर गवर्नमेंट नहीं आयी। उसके नतीजे खराब रहे। हमें कहा जा रहा है कि वहां बिजली की वजह से पानी मिला। ड्राउट सारे हिन्दुस्तान में आया लेकिन जो भी हमने मुकर्रर किया था, अंदाज लगाया था इतना अनाज पंजाब से देंगे उससे कम नहीं दिया बावजूद सारे देश में इतने ड्राउट के, बावजूद आतंकवादियों के। वहां लोग काम करना चाहते हैं। सौ फीसदी वहां के सिख और हिन्दु आपस में नहीं लड़ते। कुछ आदमी पाकिस्तान से मदद लेकर पंजाब को खराब करना चाहते हैं, उसको खत्म करना चाहते हैं। उसका आगे बढ़ने नहीं देना चाहते। मैंने वहां पब्लिक मीटिंग में कहा है लोगों से, 25—30 हजार की हाजिरी थी मैंने उनसे सवाल किया कि क्या आप

चाहते हैं कि खालिस्तान हो किसी एक ने हाथ नहीं उठाया जब मैंने उनसे पूछा कि क्या आप इसके इलाके पाकिस्तान को देना चाहते हैं तो किसी एक ने हाथ नहीं उठाया। मैंने जब उनसे पूछा कि आप हिन्दुस्तान के साथ रहना चाहते हैं या नहीं तो सब ने हाथ उठाया कि हम हिन्दुस्तानी हैं और हम हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं। मैं आपको किस्सा सुनाता हूं नाम नहीं लूंगा .आतंकवादी एक आदमी को उठा कर ले गये और उससे पांच लाख रुपये लिये। उसने पूछा क्या करोगे इन पैसों का ? क्या आप खालिस्तान के लिए इकट्ठा कर रहे हो तो उसने कहा हम नहीं जानते खालिस्तान क्या होता है। हम यह जानते हैं कि पैसा मिले। मारने से मिलता है, लूटने से मिलता है, खींचने से मिलता है, हमें मिलना चाहिए। उसका आधा पैसा आप रखेंगे और आधा पैसा किसी हथियार के लिए दे रहे हैं और कुछ उनको देंगे जो एजेंट्स पुलिस में बैठे हैं। हम यह कहते हैं कि एजेंटस कहीं पर भी हों, चाहे पुलिस में हों, पोलिटिकल पार्टी मे हो या किसी एडमिनिस्ट्रेशन में हो उसको निकाल कर कंडम करना चाहिए। वे टैररिस्ट्स से कम नहीं हैं। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि मुझे कुछ बातों का पता है। मैं लोगों के बीच में जाता हूं। हजारों की तादाद में वहां जाकर बात करते हैं तभी हमें पता लगता है कि असल में बात क्या है यह कह देना आसान है कि बरनाला सरकार ने बहुत काम किया। मैं जानना चाहता हूं क्या काम किया। उसने जो काम किया वह टैररिस्ट्स ओरिएंटेड इसको सपोर्ट करने वाले लोगों को पुलिस में भर्ती किया गया, दूसरी जगहों पर भर्ती किया गया, सक्ट्रीएट में भर्ती किया गया उसने कोई पंजाब के भले का काम नहीं किया। पानी का झगड़ा कमीशन में आया था तो उन्होंने कहा कि कमीशन अगर फैसला हमारे खिलाफ करता है तो हम नहीं मानेंगे यह खुद वकील है और अदालत का काम भी नहीं जानते वकील को पता होना चाहिए कि कोई फैसला अदालत करती है तो उसके अनुसार काम करना होता है लेकिन वह सरकार उस अदालत के फैसले को मानने को भी तैयार नहीं थी या तो इनको वकालत पढ़ने में नुक्स था या किसी और जगह नुक्सान था क्योंकि आप यह बात मानने को तैयार नहीं हैं। आज हमारे अपोजिशन के लोग यह कहें कि उसके राज को हटाया गया, यह गलत है। यह कहते हैं कि उनका कितना सुनहरा राज था। यह तो हमें पता है कि उसका कैसा राज था। हम से मत पूछिये कि कैसा राज था। हम किसी झगड़े में नहीं पड़ना चाहते।

श्री राम अवधेश सिंह : इस समय से ज्यादा क्राईम थे उस वक्त या कम ?

श्री दरबारा सिंह : आप क्राईम के आंकड़ों में क्यों पड़ते हैं।

श्री राम अवधेश सिंह : वह आतंकवादियों से भरा हुआ है।

श्री दरबारा सिंह : मैं यह कहता हूं कि मैं फिगर्स पर नहीं जाता। हालत सुधरेगी। अभी उतनी हालत नहीं सुधरी हैं जितनी हम चाहते हैं। आहिस्ता-आहिस्ता कंट्रोल हो रहा है।

श्री राम अवधेश सिंह : बरनाला साहब के राज में क्राईम कम थे या ज्यादा मैं यह जानना चाहता हूं।

SHRI DARBARA SINGH: I will not be cowed down by you. I am not yielding. What are you talking? Please keep quiet.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): He is not yielding.

SHRI DARBARA SINGH: He should understand the problem. He is not understanding the problem. He does not know what he is saying.

SHRI RAM AWADHESH SINGH: I am understanding. (*Interruptions*).

SHRI DARBARA SINGH: Please give me some time to speak. You are not the only person to speak.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): You kindly address the Chair. You need not answer the interruptions. (*Interruptions*).

श्री वरबारा सिह : मैं एक बात कहता हुं कि हमारा सुझाव भी हैं और सुझाव मेरे में हैं। हमें पुलिस के साथ डिप्टी कमिश्नर के साथ कोआर्डिनेट हो कर चलना चाहिए जिससे पता चल सके कि रिकैंकिग ठीक हैं और दूसरी बात सारी चीजें ठीक हो सके और एक-तरफा की बात न हो। मैं इस पक्ष में हूं, मजबूरी से इस पक्ष में हुं कि कोई आदमी बेगुनाह, मासूम पुलिस की तरफ से न मारा जाय। लेकिन इस हक में भी हुं कि जो टेयरिस्ट हैं, जो किसी को मारता है, उसको मारना चाहिए। यह बात भी जरूर है, मैं इससे इंकार नहीं करता क्योंकि कोई आदमी किसी बेगुनाह को, दुकान पर बैठे हुए आदमी को, माल खरीदते हुए आदमी को, किसी मोटर में बैठे हुए आदमी को, किसी आते-जाते आदमी को, दुकान पर चाय पीते हुए आदमी को गोली मार दे, उसके परिवार को खत्म कर दे तो वह आदमी गुनाहगार है। उसका कोई रिलिजन नहीं है। रीलिजन लोगों ने बनाया है। बगैर रीलिजन के भी लोग बैठे हुए हैं। लेकिन जो आदमी रीलिजन में यकीन करता है वह ऐसी बात नहीं कर सकता है। ये तो इरीलिसिस पीपुल हैं। उनका काम लूटना, खाना-पीना और बदमाशी करना है। हमें तो लज्जा आती है, लेकिन कुछ लोगों को लज्जा नहीं आती है। कुछ लोग ऐसे हैं जो फार्म पर शराब पीते हैं, रोटी खाकर उसके घर की इज्जत लूटने के लिये जाते हैं। वे कौन से सिख हैं, कौन से हिन्दू हैं? ऐसा करने वाले किसी के नहीं हैं, वे किसी में यकीन नहीं करते हैं। हमने एडमिनिस्ट्रेशन को साथ चलाने की कोशिश की है ताकि हम एक दूसरे के खिलाफ न जा सकें। कंट्रेडिक्शन नहीं होना चाहिए। लेकिन यह कहना कि अपोजिशन को पूछा नहीं गया है, यह सही नहीं हैं। मैंने खुद पिछले सेशनों में कहा कि आओ, हम मिलकर बात करें। प्राइम मिनिस्टर ने कहा। कमेटी बनाए। कमेटियों के पास कुछ आदमी गये, लेकिन कुछ नहीं गये। जिन लोगों का पंजाब से ताल्लुक हैं, कुछ लोग गड़बड़ी में मदद इन्वायरेक्टली कर रहे हैं और कोर्टली और ओवर्टली कर रहे हैं हमने कहा कि आओ बात करें, लेकिन वे वायकाट करते हैं। मैंने अपोजिशन से यहा इस हाउस में कहा कि इकट्ठा हो कर बात करें। पंजाब की तमाम पार्टीयों के खा, छोटी-बड़ी सब पार्टियों से कहा कि इक्ट्ठा हो कर बात करते हैं, एक तरफ बैठ कर बात करें और सोचें कि हमें क्या करना चाहिए और टैरिरिज्म के खिलाफ हो। लेकिन क्या हुआ? कुछ ने एक दूसरे खिलाफ बोलना शुरू कर दिया। इसमें आइडियोलाजी की बात नहीं है। वहां हमें टेरोरिज्म को खत्म करना है। हमारी आइडियोलाजी मुखतलिफ हो सकती हैं: कम्युनिस्टों की को ओर है, दूसरी पार्टियों की और है। हम एक बात के ऊपर कसनट्रेट करें कि इक्ट्ठा हो कर हमें टेरोरिज्म का मुकाबला करना है। आप मैदान में आप और लोगों, को इकट्ठा करें और इसको खत्म करें। एक दूसरे के खिलाफ बोलना खत्म करें कमेटियां बनी हुई है। डेवलपमेंट की कमेटी बनी है, काम्प्लेन्ट्स की कमेटी बनी है: वे क्या काम कर रही हैं, यह हमें बता दीजिये। आप लोग भी उनमें हैं। सारा काम गवर्नमेंट के सुपुर्द हैं। लेकिन अगर पब्लिक के आदमी जिनके ऊपर नार्मलसी लाने की जिम्मेदारी है वे कोशिश नहीं करेंगे तो कैसे काम चलेगा। लेकिन वे तो काम को बंद किये हुए हैं। अकेले गवर्नमेंट काम कर रही है। ये लोग कहते हैं कि गवर्नमेंट नहीं चाहती है, प्राइम मिनिस्टर नहीं चाहते हैं, प्राइम मिनिस्टर की इंटेंशन नहीं है और यह कहना कि ये तो सिर्फ सीटें जीतने के लिए काम करतें हैं और पंजाब की सीटें जीतने के लिए टूल बना रहे हैं, यह सब ठीक नहीं है। यह बिल्कुल गलत बात है। इस गलत बात का आप जस्टिफिकेशन किस लिये देते हैं। मैंने यह अर्ज इसलिये किया है कि वहां पर चाहे सी०आर० पी०एफ० हो चाहे पंजाब पुलिस हो दोनों को इकट्ठा लेकर काम करने की जरूरत है। सी०जी०आर०एफ० को क्या हिदायत है, पंजाब पुलिस को क्या हिदायत है, दोनों को एक ही हिदायत पर

चलना चाहिये । मैं सुझाव भी दे रहा हुं यह नहीं कि मैं सिर्फ क्रिटिसिज्म कर रहा हुं। उनका जिन लोगों ने हमारा साथ नहीं दिया । लेकिन साथ ही साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि यह बात होनी चाहिए । अब मैं इंडस्ट्री के बारे में कहता हुं । अगर पंजाब में बिजली है तो इंडस्ट्री भी लगनी चाहिये । लेकिन शायद आपको पता नहीं है कि कुछ लोग शायद इसलिए नही जाना चाहते क्योंकि वहां पर नार्मलसी की हालत उनके मुताबिक नहीं है । सब से ज्यादा सेंसटिव आदमी इंडस्ट्रियलिस्ट है । वह सोचता है कि मैं यहां पर पैसा लगाकर क्या चार पैसे कमा सकता हूं । वह एग्रीकल्चरिस्ट नहीं है । एग्रीकल्चरिस्ट जमीन नहीं छोड़ता । वह उसमें मेहनत मस्सकद करके पैदावार लगाता है और पैदा करके उसको बेचता है । यह दूसरी बात है कि उसको उसकी पैदावार का जितना मिलना चाहिये उतना मिलता है या कम मिलता है लेकिन वह जमीन नहीं छोडता और उसको पकड़ कर बैठ रहता है । लेकिन इंडस्ट्रियलिस्ट है वे अगर यहां नहीं है तो यू.पी. में चले जायेंगे, यू.पी. में नहीं तो हरियाणा में चले जायेंगे, हरियाणा में नहीं तो बम्बई चले जायेंगे । वह जहां भी उसे फायदा होगा इंडस्ट्री लगायेंगे । इंडस्ट्री लग रही है । कई लोगों के मामलें पड़े हैं । क्योंकि उन्हें इजाजत नही मिली । हम चाहते हैं कि शुगर फैक्टरी वहां लगे । वहां पर शुगर फैक्टरी लग सकती है और ये लगनी चाहिये । यह वहां के लोगों की डिमांड है । वहां गन्ना पैदा होता है । हम सिर्फ इस बात पर नहीं रह सकते कि हम सिर्फ अनाज ही पैदा करें । हम कमर्शियल क्राप्स भी चाहते हैं जिससे हमें और पैसा मिल सके । वह इंडस्ट्री है और इंडस्ट्री लगाने के लिए मेरी तजवीज भी है । मैं निमिस्टर साहब को एक तजवीज देता हूं और यह तजवीज यह है कि सारे हिन्दुस्तान को 15 भागों में बांट दिया गया है, उनके डेवलपमेंट को देखने के लिये उसमें पंजाब या जो दूसरे सारे सूबे हैं इनके 15 या 16 जौन बनाये हूए हैं । प्लानिंग मिनिस्टर साहब भी यहां पर बैठे हुए हैं । मैं यह कहना चाहता हुं कि आप 50-50, 60-60 गांव के सेंटर में कोई जगह देखें और वहां पर सड़कें, स्कूल, अस्पताल ऐसी सारी चीजें बनाकर उसे शहर के माफिक बनाये ताकि वहां पर छोटी मोटी इंडस्ट्री लग सके । वहां पर छोटी मोटी इंडस्ट्री अगर लग जायेगी तो अपने घर की रोटी खाकर लोग साइकिल पर आकर यहां काम करने आ सकते हैं और शाम को वापस अपने घर जा सकते हैं और 500 रुपया, 600 रुपया या रुपया जो उसे मिले उससे वह अपने परिवार और अपना जीवन चला सकता है ऐसी चीजें जरुरी हैं ताकि वह इंडस्ट्री इन लोगों को भी रोटी दे सके । इसके साथ साथ जो सबसे बड़ी बात है वह यह है कि वहां यूनियन होगी और यूनियन वाले कभी भी कम्युनल नहीं हो सकते । वह अपनी डिमांड इस बात के लिये करेंगे कि हमको पैसे कम मिलते हैं, वह इस बात की डिमांड नहीं करेगा कि मैं हिन्दू हूं, मुसलमान हूं या सिख हूं, इसलिये ऐसा मिलना चाहिए मुझे खाने के लिये, और दूसरों को कम मिलना चाहिए । इसलिये ऐसा होगा पर वहां पर नेशनल इन्टीग्रेशन की सूरत भी पैदा होगी । इसलिये आप उसमें इस बात को भी एक शक्ल दीजिए और आप इस काम को आगे बढ़ा सकते हैं । हमने पंचायती राज में पैसा दिया है । एक किश्त गई है और दो और जायेंगी । हो सकता है कि इसमें पैसा कम हो लेकिन लोगों में कांफिडेंस आया है और लोगों को भरोसा हुआ कि सरकार ने जो यह किया है हम इसके पीछे चलें । जहां जहां मैं गया हूं, सब जगह लोगों ने हाथ उठा के कहा है कि इससे हमारी पूछ हूई है, इंकलाब हुआ है और अब प्लानिंग जो है वह नीचे से ऊपर तक जायेगी, ऊपर से नीचे नहीं आयेगी । यह बात उनको अंदर पैदा हुआ है कि आज प्राइम मिनिस्टर ने इंकलाब लाकर हमें उस जगह पर खड़ा कर दिया है जहां पर सरकार में हमारी भी हिस्सेदारी होगी । एडमिनिस्ट्रेशन में जिस तरह सेंटर की हिस्सेदारी है, जिस तरह से सूबों की हिस्सेदारी है उसी तरह की हिस्सेदारी हमारी भी हो गई है । यह एक आइडिया आ जाना जो है वह पैसा मिलने से भी ज्यादा, जो उनके दिमाग को बदलना था जरुरी वह इसमे हो गया है । इसके साथ-साथ रोजगार भी है । आप रोजगार के बारे में कहते हैं कि पैसा कम है ।

श्री दरबारा सिंह

पैसा बहुत कम है। आपने तो कुछ नहीं किया। आप तो कुछ भी नहीं करते थे। अब हमने बहुत कुछ किया और जो कुछ हुआ है तो आप उसकी तारीफ करने की बजाय क्रिटिसाइज करते हैं। वह सब कुछ है, करिये, आपका काम है अपोजिशन करना। अपोजिशन आप करिये। लेकिन मैं कहता हूं कि अपोजिशन ऐसा होना चाहिए जो कंस्ट्रक्टिव हो। आप कोई सुझाव यहां नहीं देते कि इस बात के लिए यह करें ताकि पंजाब में आराम हो सके। यहां अपोजिशन किया और कहा कि यह सरकार निकम्मी है, यह कुछ नहीं करती है, 106 निकलेंगे, बाहर निकलेंगे, और निकलेंगे, यह करेंगे, वह करेंगे। मैं अपने दोस्त से बात कर रहा था। मैंने कहा कि मैं किसी को इस गैलरी में बैठने के लिए कोई चिट नहीं देता। चिट्ठी दे सकता हूं। कहते हैं ऐसा क्यों है। मैंने कहा कि आजकल जो कुछ हम कर रहे हैं, यह शायद पंचायत वाले देखेंगे तो हम पशेमान होंगे, सोचेंगे ये हमसे ज्यादा आगे बढ़ गये हैं। हम को तो कहते हैं कि कुछ नहीं करते, यहां कुछ नहीं होता लेकिन यहां जो लड़ाई हो रही है एक दूसरे पर दोष लगा रहे हैं, गालियां निकाल रहे हैं, हाथ उठा रहे हैं, ज्यादा ऊंचा बोल रहे हैं। देहात में खाते पीते आदमी की आवाज में भी इतनी ताकत नहीं होती जितनी कि यहां बैठे हुए लोग इस्तेमाल करते हैं। यह ताकत का इस्तेमाल, जुबान का इस्तेमाल गला फाड़ने का यूज जो है इसको हम नीचे ले गये हैं। मैं कहता हूं अगर आप कंस्ट्रक्टिव बात कहें तो हम मानेंगे कि यह बात ठीक है। कैसे नहीं मानेंगे। आप कहें तो सही, इकट्ठे तो हों, मिलें तो सही, प्राइम मिनिस्टर से बात करें, आप मेमोरेंडम बनाकर दें कि ये बातें होनी चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी के एक आदमी श्री डांगे लिखते हैं, अच्छा करते हैं। हम उनकी तारीफ करते हैं। हम उनकी तारीफ नहीं करते, कांग्रेस वाले की भी नहीं करते। जो काम करते हैं उनकी तारीफ करते हैं। बेशक कम्युनिष्ट पार्टी के हों। वहां देहात में कोई नहीं जाता, शहरों में बैठकर बातें करते हैं। हम यहां पर आकर इसलिए कोसते हैं इसलिए खिलाफ कहते हैं कि आपका पता नहीं है कि पंजाब की हालत क्या है। वहां कौन से लोग लगे हुए हैं। कितने स्मगलर्स हैं। मैंने पुलिस को कहा कि सारे स्मगलर्स को अंदर करो, किसी पर रहम मत करो। आप इसमें क्या-क्या मदद कर रहे हैं। मेरे साथी बैठे हैं, मुझे माफ करेंगे लेकिन जम्मू काश्मीर में कुछ कम नहीं हो रहा है वहां से इधर-उधर आकर फिर वही काम कर रहे हैं। आप पढ़ते होंगे, वहां कौन-कौन से लोगों ने क्या कुछ नहीं किया। किस-किस ने दखल नहीं किया। दखल भी दे रहे हैं और हम उनको हटाना चाहते हैं जो उन लोगों के बीच में दखल देते हैं, गन्दे और अनडिजाइरेबुल लोगों की मदद हम नहीं करना चाहते हैं और जो करते हैं हम उनको सख्त कन्डेम्न करते हैं चाहे वे किसी पार्टी या किसी जगह के रहने वाले हों।

मैंने अकालियों से बात की। मैंने कहा कि यह आनंदपुर साहब रिजोल्यूशन है क्या, पता है आपको। कोई कहते है कि हमें पता नहीं है, इतना ही पता है कि आनंदपुर साहब में पास हुआ था। गुरु गोविंद सिंह जी को कहा गया कि यहां जो लड़ाई हो रही है हम उसमें कामयाब नहीं होंगे, आप आनंदपुर साहब छोड़ जायें। वे आनंदपुर पाहब छोड़ गये। लेकिन यह रिजोल्यूशन नहीं छोड़ा है। फिर रिजोल्यूशन बड़ा है या गुरु बड़े हैं। मुझे समझ में नहीं आता। आनंदपुर साहब का रिजोल्यूशन जो है उसमें यह है कि देश और कास्ट.. (**व्यवधान**).. हमारी अलहिदा होगी.. (**व्यवधान**) और उसमें अलहिदा हमारा हिस्सा होगा अगर यह ठीक इसको आप कहते हैं कि यह आनंदपुर साहब का रिजोल्यूशन है तो उनसे बात करूंगा.. (**व्यवधान**) आम तौर पर बोलते हैं कि हमने नहीं कहा, बाहर जाकर नहीं कहा अंदर नहीं कहा। नहीं कहा तो ठीक है उसके, पास टेप रिकार्डर हैं, हमें दिखायें। हम यह कहते हैं कि बार बार यह सवाल कौन उठाता

हैं। जो उसके मेम्बर थे वे थे सरदार बर्नाला जी। वे कहते हैं कि आनंदपुर साहब रिजोल्यूशन से हमारा कोई काम नहीं। रिजोल्यूशन में बहुत सी बातें हैं। इकनामिक भी है जैसे गरीबों के लिए होना चाहिए। मैं मानता हूं। वह आवाज उठाई। इसमें हम भी उनके साथ हैं। हम भी कहते हैं कि पावर्टी की रेखा से नीचे जो हैं उनको मदद करने के लिए हमने जवाहर योजना बनाई है, रोजगार योजना बनायी है, और बहुत सी चीजें आ रही है, अगर आपने सारा पढ़ा हो। आपको सारी इन्फारमेशन नहीं है। पंजाब में डवलेपमेंट हो, स्कूलों को दुरुस्त किया जाये, सौ और स्कूल बनाये जायें, जो पावर है उसको बढ़ाने के लिए डेवलपमेंट हो इंडस्ट्री को ज्यादा बढ़ाने के लिए हो .. (**समय की घंटी**)

मेरी बात को खत्म तो हो लेने दें! अभी छः तो बजे नही। .. (**व्यवधान**) तो यहां पर मैं मोटी बात फिट कहना चाहता हूं कि हमें जरूरत है पेपर मिलें हमारे यहां लगें। पेपर मिल्ज हम चाहते हैं।

वहां शूगरकेन बहुत है, शूगर की वहां जरूरत है।

वहां हम चाहते हैं कि वनस्पति भी हो सके। यह नहीं कि वनस्पति को एक दफा खोला और फिर बंद कर दिया। यह नहीं होना चाहिए। वनस्पति वहां चाहिए क्योंकि वहां सब कुछ मोजूदा हैं। लोग लगाने के लिए तैयार हैं। यह बात किसने किसी को समझ दी है कि वहां इंडस्ट्री नहीं है, इंडास्ट्री भाग कर जा रही है। बहुत सी और लगी हैं, लगाने के लिए लोग तैयार हैं।

जब यहां से डराते हैं, आप कहते हैं कि पंजाब में चले हो, देखना कहीं सेफ एंड साऊंड आ जाओगे? यह यहां बैठे लोग डराते है। सो वहां जाने से लोग घबराते हैं।

मैं यह कहता हूं और गौरव से कहता हूं पंजाब की जो कांग्रेस की सरकार थी, उस वक्त लाखों नहीं करोड़ों रुपया लोगों ने लगाया है, जो नान रेजीडेंट इंडियंस हैं, यहां आप और पंजाब में उनके कारखाने अभी लगे हुए हैं। जाकर देखो मोहाली और चंडीगढ़ के इर्द गिर्द लगे हैं। बहुत से और लोग लगाना चाहते हैं, लेकिन यहां से अगर हम सब मिल करके एक बात नहीं करते- एक बात तो करें।

अगर आप समझते हैं कि हिंदुस्तान नहीं टूटना चाहिए --मेरे दोस्त ने कहा है, बड़ी अच्छी बात कही हैं उन्होंने कि नहीं टूटना चाहिए, लेकिन अगर तोड़ने के आसारों की आप इमदाद करते हैं, तो फिर उसका क्या इलाज हो सकता हैं, बताती हैं?

आज मैं यह बात नहीं करना चाहता जो एन० टी० रामाराव ने कही कि कौन ट्रेटर है? हम ट्रेटर्ज को जानते हैं कि कौन ट्रेटर्ज हैं। He is a Chief Minister, he must know his duty. He is not an ordinary person. He is talking like a street singer. He should mend his ways. These are not the proper words to be used. (*Interruptions*). You should be ashamed of what you are doing. हम किसी को ट्रेटर नहीं कहते। कहता हूं कि हम सारे हिंदुस्तानी हैं (**व्यवधान**)

श्री बी० सत्यनारायन रेड्डी : प्रधान मंत्री को क्या यह कहना शोभा देता है कि किसी राज्य के इलेक्टिड चीफ मिनिस्टर को चीट कहना क्या यह ठीक है? .. (**व्यवधान**)

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी: अगर आप मुख्य मंत्री थे पंजाब में, तो आपको मालूम होगा .. (**व्यवधान**)

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): You should be ashamed. (*Interruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): You will get

श्री बी० सत्य नारायण रेड्डी : आप पंजाब के बारे में बोले। वहां खून बह रहा है, उसके बारे में कुछ कहें। . . (**व्यवधान**)

श्री दरबारा सिंह : मैं पंजाब के बारे में कह रहा हूं कि वह हिन्दुस्तान का हिस्सा हैं। देश को टूटने से बचाना है। . . . (**व्यवधान**)

एक माननीय सदस्य : वह समझते नहीं हैं कि क्या बोल रहे हैं।

श्री दरबारा सिंह : इसलिए मैं बता रहा हूं। आपको समझ में न आए, तो इसमें मेरा क्या कसूर है। . . . (**व्यवधान**) तो उस वक्त आपने उस आदमी पर एतराज क्यों नहीं किया जब आनरेबल मेम्बर ने बोफोर्स के बारे में कहा. . . (**व्यवधान**) आपका पेट अफरा हुआ है, मुझे बताओ तो सही।

मैं यह कहता हूं कि अगर पंजाब का मसला हैं, तो पंजाब तक महदूद रखिये. . . (**व्यवधान**) तो पाकिस्तान की तरफ इन्हें खुशी है कि. . . (**व्यवधान**) In future I will not allow you to speak. If you disturb me like this I will not allow you to speak. I will be the first person to oppose you if you do not allow others to speak. Please be fair to us.

मैं आपका मुंह सील तो नहीं कर सकता मैं अर्ज ही कर सकता हुं . . . (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly do not answer interruptions. You can speak.

6-00 P.M.

SHRI DARBARA SINGH: You must control him, Sir. You do not ask me. I am not here to control any body. Only through you I can ask somebody.

तो मैं पाकिस्तान की सरहद के साथ-साथ अभी तक उनके 12 ऐसी जगहें हैं जहां पे ये हथियारबंदी करने के लिए उनको ट्रेनिंग देने के लिए उनकी मदद करने के लिए अभी तक वहां ट्रेनिंग शुरू है बावजूद इस बात के कि बेनज़ीर भुट्टो नहीं चाहती हैं कि पंजाब के साथ हमारे ऐसे ताल्लुकात हों हिन्दुस्तान से वह अच्छे ताल्लुकात करने की वह ख्वाहिशमंद हैं, लेकिन पंजाब का जो चीफ मिनिस्टर वहां हैं वह ऐसे आदमियों को अपने रेंजर्ज को वहां भेज रहा है असला और सारी ट्रेनिंग और उसके साथ यह आकर इसको डीस्टैबेलाइज करने के लिए कहे आप यह समझते हैं कि पंजाब अगर डिस्टैबेलाइज हो तो बाकी हिन्दुस्तान बचेगा ? यह नहीं है। अब किसी सूबे में भी खराबी होती है तो उसको इस तरह से लेना चाहिए कि हम उसको कैसे बंद कर सकते हैं। नार्मेलिसी कैसे आए। हम नार्मेलिसी के हक में हैं। पापूलर गवर्नमेंट आए हम इसके हक में हैं। आने वाले समय में जितने भी चुनाव हो रहे हैं हम चाहते हैं कि उसके साथ हमारे भी चुनाव हो, पार्लियामेंट के चुनाव होते हैं तो हमारे भी चुनाव हों और हम सब लोग अपने-अपने क्षेत्रों में जा कर वहां कहीं के भी रहने वाले हैं वहां जाकर चुनाव लड़ें। हम यह चाहते हैं कि क्या हम यह चाहते हैं कि प्रेसीडेंट रूल रहे ? हम प्रेसीडेंट रूल के हक में नहीं हैं, लेकिन मजबूरी है और वह मजबूरी में आप भी मजबूर हैं कोई सवाल उठाने के लिए और डिस्ट्रोक्टिव नहीं, कंस्ट्रक्टिव जितने भी सुझाव होंगे वह सरकार भी मानेगी।

इन अलफाज के साथ, मैं इस की सपोर्ट करता हूं और यह मांग करता हूं कि सैन्ट्रल गवर्नमेंट से कि गवर्नमेंट पंजाब की पूरी तौर पर फाइनेंशियली मदद करनी चाहिए ताकि वह अपने पांव पर खड़ा हो कर इस सारी स्थिति का मुकाबला कर सके, जिस से हम सारे दुखी हैं।

धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Further discussion on the Punjab Appropriation (No. 2) Bill, 1989, will continue tomorrow. The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow, the 1st August, 1989.

The House then adjourned at three minutes past six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 1st August 1989.